अरदास

मुंगी वैगी सब्जी
मूंगो होग्या रे तेल,
लाडी अर गाड़ी रो
कीकर होवेला मेल,
रोटी मांगे सब टाबरिया
घास ने बांटो ढांडा मांगे,
काम कठेई मिले कोनी
सगळा रो पेट रोटी माँगे,
भोर सूं सिंजियारा तक
मजदूरी मागणने जाऊं,
लुखी सूखी जिकी मिळे
सगळा री भूख मिटाऊं,
धरती रा रखवाला सुण
जलम दियो तो दे रोटी,
मिनख जमारो दियो है
तूं दया तो कर थोड़ी सी,
जिनावरां रो धरती माथै
तू ही तो एक रखवाळो है,
धान खातर बिरखा करो
जीवण रो एक सहारो है,
धरती माथै जीव मोकळा
सब जीव जीव रा लागू है,
चोखा काम करणीयां ने
मिनख जमारो मिल्यो है,
सगळा मिनख,जीनावराँ ने
मत भूखा तिरसा राख जो,
में हाथ जोड़ ने करूँ अरज
थांरी किरपा सब पर राखजो,
झिरमिर झिरमिर मेह पड़े
सावण में मोर पपिया गावै,
करुण पुकार सुण चौमासे में
उमड़ घुमड़ बादलिया गाजै,

– गोपाल कृष्ण व्यास
अध्यक्ष, राज्य मानवाधिकार आयोग